॥ श्रीः ॥

सरस्वतीकवचस्तोत्र ।

वि०वा०पं०ज्वालाप्रसादजीमिश्र कृत-
भाषाटीकासमेत ।

जिसको
खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन,
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्धकिया ।

संवत् १९६९, शक १८३४.

श्रीशारदायै नमः ।



दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।
या साकुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानासमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥१॥

॥ श्रीः ॥

अथ

सरस्वतीकवच स्तोत्र ।

भाषाटीकासमेत ।



प्रथम अध्याय १.

नारद उवाच ।

श्रुतंसर्वंमयापूर्वंत्वत्प्रसादात्सुधोपमम् ॥
अधुनाप्रकृतीनांचव्यस्तंवर्णयपूजनम् ॥ १ ॥

भा०टी०—नारदजीने कहा हे प्रभो ! मैंने आपके अनुग्रहसे सुधाके समान मधुर पूर्वतन सब वृत्तान्त सुना. अब पंचप्रकृति देवियोंकी पृथक् २ पूजा कहिये ॥ १ ॥

कस्याःपूजाकृताकेनकथंमर्त्यैप्रचारिता ॥
केनवापूजिताकावाकेनकावास्तुताप्रभो ॥ २॥

भा०टी०-किसकी किसने किस मंत्रसेपूजा करीहै, किसने किसप्रकार किसका स्तव कहा है ? किसप्रकार किसकी पूजा मर्त्यलोकमें प्रचारित हुई ॥ २ ॥

तासांस्तोत्रंचध्यानंचप्रभावंचरितंशुभम् ॥
काभिःकेभ्योवरोदत्तस्तन्मेव्याख्यातुमर्हसि ३॥

भा०टी०-उनमें प्रत्येकका स्वोत्र, ध्यान, प्रभाव और चरित सेवा किसप्रकार है ? और किस देवीने किसको किसप्रकार वरदान किया है ? वह आनुपूर्विक संपूर्ण पृथक् पृथक् वर्णन कीजिये ॥ ३ ॥

श्रीनारायण उवाच ।

गणेशजननीदुर्गाराधालक्ष्मीःसरस्वती ॥
सावित्रीचसृष्टिविधौप्रकृतिःपंचधास्मृता॥४॥

भा०टी०-नारायणने कहा हे वत्स ! सृष्टिविषयमें गणेशजननी, दुर्गा, राधा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री यह पंचप्रकृति ही मूलाधार हैं यह तो सुना है४॥

आसांपूजाप्रसिद्धाचप्रभावः परमाद्भुतः ॥
सुधोपमंचचरितंसर्वमंगलकारणम् ॥ ५ ॥

भा०टी०-इसके अतिरिक्त उनकी पूजाविधि, अद्भुत प्रभाव, अपूर्व स्तोत्र और सुधासदृश सर्वमङ्गल-निदान चरित वेदपुराण और तंत्रादि संपूर्ण शास्त्रोंमेंही प्रसिद्ध हैं अतएव उनके वर्णन करनेका प्रयोजन नहीं है ॥ ५ ॥

प्रकृत्यंशाः कलायाश्चतासांचचरितंशुभम् ॥
सर्ववक्ष्यामिते ब्रह्मन्सावधानोनिशामय ॥६॥

भा०टी०-अब जो प्रकृतिके अंश और कलासे उत्पन्न हैं उनकेही शुभचारित्रका वृत्तान्त आद्योपान्त वर्णन करता हूं सावधान होकर सुनो ॥ ६ ॥

कालीवसुंधरागंगाषष्ठीमंगलचंडिका ॥
तुलसीमनसानिद्रास्वधास्वाहाचदक्षिणा॥७॥

भा०टी०-काली, वसुन्धरा, गङ्गा, षष्ठी, मंग-

लचण्डिका, तुलसी,मनसा, निद्रा, स्वधा, स्वाहा और दक्षिणा यह प्रकृतिके अंश हैं ॥ ७ ॥

संक्षिप्तमासांचरितंपुण्यदंश्रुतिसुंदरम् ॥
जीवकर्मविपाकंचतच्चवक्ष्यामिसुंदरम् ॥ ८ ॥

भा०टी०—इनका पुण्यदायक श्रवणसुखकर चरित्र उसीके संग जीवोंका सुन्दर कर्मविपाक कहताहूं ॥ ८ ॥

दुर्गायाश्चैवराधायाविस्तीर्णंचरितंमहत् ॥
तद्वत्पश्चात्प्रवक्ष्यामिसंक्षेपक्रमतःशृणु ॥ ९ ॥

भा०टी०—एवं दुर्गा और राधाके अत्यन्त विस्तारित उदारचरितका क्रमानुसार संक्षेपसे वर्णन करूंगा ॥ ९ ॥

आदौसरस्वतीपूजाश्रीकृष्णेनविनिर्मिता ॥
यत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठमूर्खोभवतिपंडितः ॥ १० ॥

भा०टी०—सम्प्रति सरस्वतीका वृत्तान्त कहता हूं सुनो. हे मुनिवर! जिन वीणापाणीके प्रभावसे अज्ञानान्ध

मूढपुरुषोंका हृदयाकाशभी ज्ञानालोकसे प्रकाशित होताहै श्रीकृष्णने सबसे प्रथम उन्हीं देवी सरस्वतीकी पूजा भारतमें अवतीर्ण की है ॥१०॥

आविर्भूतायथादेवीवक्त्रतःकृष्णयोषितः ॥
इयेषकृष्णंकामेनकामुकीकामरूपिणी ॥ ११ ॥

भा०टी०–कामरूपिणी कामुकी देवी सरस्वतीने राधाके जिह्वाग्रभागसे आविर्भूत होकर कामवश कृष्णकोही पति बनानेकी अभिलाषा की ॥११॥

सचविज्ञायतद्भावंसर्वज्ञः सर्वमातरम् ॥
तामुवाचहितंसत्यंपरिणामेसुखावहम् ॥ १२ ॥

भा०टी०–सर्वान्तर्यामी श्रीकृष्ण तत्काल यह जान कर उन लोकमातासे परिणाम सुखकर सत्य और पथ्य वचन कहने लगे ॥ १२ ॥

श्रीकृष्ण उवाच ।

भजनारायणंसाध्विमदंशंचचतुर्भुजम् ॥
युवानंसुंदरंसर्वगुणयुक्तंचमत्समम् ॥१३॥

भा०टी०—श्रीकृष्ण बोले हे पतिव्रते ! मेरे अंशोत्पन्न चतुर्भुज नारायण युवा, सुश्री और सर्वगुणान्वित हैं यही क्या ! वरन् मेरेही समान हैं ॥ १३ ॥

कामज्ञंकामिनीनांचतासांचकामपूरकम् ॥
कोटिकंदर्पलावण्यंलीलालंकृतमीश्वरम्॥१४॥

भा०टी०—वह ऐश्वरिक गुणसे विभूषित हैं अतएव स्त्रियोंके हृदयकी वासना विलक्षण जानते हैं और वासना पूर्णभी करते हैं उनके सौन्दर्यकी बात क्या कहूं ? उनके शरीरमें करोड कामदेवकी लावण्यता क्रीडा करतीहै ॥ १४ ॥

कांतेकांतंचमांकृत्वायदिस्थातुमिहेच्छसि ॥
त्वत्तोबलवतीराधानभद्रंतेभविष्यति ॥१५ ॥

भा०टी०—हे कान्ते ! और यदि मुझको पति बनाकर मेरे निकट वास करनेकी इच्छा करो तो यह तुमको कल्याणदायक नहीं है. क्योंकि, मेरे समीपस्थ राधा तुम्हारी अपेक्षा प्रबल है ॥ १५ ॥

योयस्माद्बलवान्वाणिततोऽन्यंरक्षितुंक्षमः ॥
कथंपरान्साधयतियदिस्वयमनीश्वरः ॥१६॥

भा०टी०—यदि कोई पुरुष अपेक्षाकृत बलवान् हो तो वह आश्रित पुरुषकी अन्यसे रक्षा करनेमें समर्थ होसक्ता है. किन्तु यदि उसकी अपेक्षा दुर्बल हो तो स्वयं असमर्थ होकर किसप्रकार दूसरेकी रक्षा कर सकता है ॥ १६ ॥

सर्वेशः सर्वशास्ताऽहंराधांबाधितुमक्षमः ॥
तेजसामत्समासाचरूपेणचगुणेनच ॥ १७ ॥

भा०टी०—यद्यपि मैं सर्वेश्वर हूं और सबका शासन करता हूं किन्तु मुझमें राधाको शासन करनेकी सामर्थ्य नहीं है. क्योंकि वह क्या प्रभाव, क्या रूप, क्या गुण, सर्वांशमेंही मेरे समान है ॥ १७ ॥

प्राणाधिष्ठात्रीदेवीसाप्राणांस्त्यक्तुंचकःक्षमः ॥
प्राणतोपिप्रियःपुत्रःकेषांवास्तिचकश्चन ॥१८॥

भा०टी०-राधाको परित्याग करनेकी भी मुझमें सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि राधा मेरे प्राणकी अधिष्ठात्री देवता हैं अतएव कौन पुरुष अपना जीवन विसर्जन करनेमें समर्थ होताहै ? यद्यपि पुत्र सबके आदरकी सामग्री है तो भी क्या प्राणोंसे अधिक प्रियतम होसकता है ? ॥ १८ ॥

त्वंभद्रेगच्छवैकुण्ठंतवभद्रंभविष्यति ॥
पतिंतमीश्वरंकृत्वामोदस्वसुचिरंसुखम्॥१९॥

भा०टी०-इस कारण हे भद्रे ! तुम वैकुण्ठधाममें जाओ वहां तुमको कल्याण लाभ होगा तुम वैकुण्ठनाथको पति पाकर चिरकाल सुखपूर्वक विहार करसकोगी ॥ १९ ॥

लोभमोहकामक्रोधमानहिंसाविवर्जिता ॥
तेजसात्वत्समालक्ष्मीरूपेणचगुणेनच ॥२०॥

भा०टी-यद्यपि लक्ष्मी वहां वास करती है किन्तु वहभी तुम्हारे समान काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद

और मात्सर्यके वशीभूत नहीं है और क्या रूप, क्या गुण, क्या प्रभाव, सर्वांशमेंही तुम्हारे समान है॥२०॥

तयासार्धंतवप्रीत्याशश्वत्कालःप्रयास्यति ॥
गौरवंचहरिस्तुल्यंकरिष्यतिद्वयोरपि ॥ २१ ॥

भा०टी०—अतएव उनके संग परमसुखसे काल व्यतीत करसकोगी वैकुण्ठनाथ हरिभी तुम दोनोंकाही समान आदर करेंगे ॥ २१ ॥

प्रतिविश्वेषुतांपूजांमहतींगौरवान्विताम् ॥
माघस्यशुक्लपंचम्यांविद्यारंभेचसुंदरि ॥ २२॥

भा०टी०—हे सुन्दरि ! विशेषतः मैं कहता हूं प्रति ब्रह्माण्डमेंही माघ मासकी जो शुक्ला पंचमीके दिन विद्यारंभ होता है उस दिनके महामहोत्सवमें ॥ २२॥

मानवामनवोदेवामुनींद्राश्चमुमुक्षवः ॥
वसवोयोगिनःसिद्धानागागंधर्वराक्षसाः॥२३॥

भा०टी०—क्या मनुष्यगण, क्या मनुगण, क्या देवगण, क्या मुमुक्षुमुनि,क्या वसु, क्या योगी, क्या

नाग, क्या सिद्ध, क्या गंधर्व, क्या राक्षस ॥ २३ ॥

मद्वरेणकरिष्यंतिकल्पेकल्पेलयावधि ॥
भक्तियुक्ताश्चदत्त्वावैचोपचाराणिषोडश ॥२४॥

भा०टी०–मेरे वरसे सभी जबतक महाप्रलय उपस्थित नहीं होता तबतक प्रतिकल्पकल्पमें भक्तिभावसे षोडशोपचारद्वारा तुम्हारी पूजाकरेंगे ॥ २४ ॥

कण्वशाखोक्तविधिनाध्यानेनस्तवनेनच ॥
जितेंद्रियाःसंयताश्चघटेचपुस्तकेऽपिच ॥२५॥

भा०टी०–सब जितेन्द्रिय और संयमी होकर घटमें वा पुस्तकमें तुमको आवाहन करके यजुर्वेदके कण्वशाखोक्तविधानसे ध्यान और स्तवपाठकरके तुम्हारी अर्चना करेंगे ॥ २५ ॥

कृत्वासुवर्णगुटिकांगंधचंदनचर्चिताम् ॥
कवचंतेग्रहीष्यंतिकंठेवादक्षिणेभुजे ॥ २६ ॥

भा०टी०–तुम्हारा कवच आठप्रकार गंधद्रव्य-

द्वारा भोजपत्रपर लिख सुवर्णके तावीजमें मढाय कंठमें वा दक्षिण भुजामें धारण करै ॥ २६ ॥

पठिष्यंतिचविद्वांसःपूजाकालेचपूजिते ॥
इत्युक्त्वापूजयामासतांदेवींसर्वपूजिताम् ॥२७॥

भा०टी०—विशेष करके विद्वान् पुरुषमात्रही पूजाकालके समय तुम्हारे स्तवपाठमें निरत होंगे. इस प्रकार कहकर पूर्णब्रह्म श्रीकृष्णने स्वयं सरस्वती देवीकी पूजा करी ॥ २७ ॥

ततस्तत्पूजनंचक्रुर्ब्रह्मविष्णुशिवादयः ॥
अनंतश्चाऽपिधर्मश्चमुनींद्राःसनकादयः ॥२८॥

भा०टी०—उसी दिनसे ब्रह्मा, विष्णु और महादेव तथा अनन्त देव, धर्म, सनकादि मुनीन्द्रगण ॥२८॥

सर्वेदेवाश्चमुनयोनृपाश्चमानवादयः ॥
बभूवपूजितानित्यासर्वलोकैः सरस्वती ॥२९॥

भा०टी०—समस्त देव, समस्त मुनि, समस्त राजा और समस्त दानवोंके समाजने सरस्वती देवीक

पूजा आरंभ की है. हे वत्स नारद ! इसप्रकार उन अनन्तकालस्थायिनी देवी सरस्वतीकी पूजा तीनों लोकोंमें प्रचलित हुई है ॥ २९ ॥

नारद उवाच ।

पूजाविधानंकवचंध्यानंचापिनिरंतरम् ॥
पूजोपयुक्तंनवेद्यंपुष्पंचचंदनादिकम् ॥ ३० ॥

भा०टी०—नारदजी बोले, हे वेदविदांवर ! सरस्वतीपूजाकी श्रवणमनोहर पद्धति, ध्यान, कवच, स्तोत्र और पूजाके उपयुक्त नैवेद्य, पुष्प और चन्दनादि उपचारका ॥ ३० ॥

वदवेदविदांश्रेष्ठश्रोतुंकौतूहलंमम ॥
वर्ततेहृदयेशश्वत्किमिदंश्रुतिसुंदरम् ॥ ३१ ॥

भा०टी०--विषय सुननेके लिये मेरे हृदयमें सदा महाकौतूहल विद्यमान रहता है अतएव आप वह सब कहिये ॥ ३१ ॥

श्रीनारायण उवाच

शृणुनारदवक्ष्यामिकण्वशाखोक्तपद्धतिम् ॥
जगन्मातुःसरस्वत्याःपूजाविधिसमन्विताम् ३२

भा०टी०—नारायणने कहा हे वत्स नारद ! यजुर्वेदके अन्तर्गत कण्वशाखामें जगन्माता सरस्वतीकी पूजाविधि समन्वित जैसी पद्धति प्रचलित है वह कहताहूं सुनो ॥ ३२ ॥

माघस्यशुक्लपंचम्यांविद्यारंभदिनेऽपिच ॥
पूर्वेऽह्निसमयंकृत्वातत्राऽह्निसंयतःशुचिः ॥३३॥

भा०टी०—माघशुक्ला पंचमी वा विद्यारंभदिनके पहिले दिन संयत और पवित्र हो ॥ ३३ ॥

स्नात्वानित्यक्रियाःकृत्वाघटंसंस्थाप्यभक्तितः ॥
स्वशाखोक्तविधानेनतांत्रिकेणाऽथवापुनः ३४॥

भा०टी०—स्नानके पीछे नित्यकर्मका अनुष्ठान कर कण्वशाखोक्त विधानसे, अथवा तंत्रोक्त विधानसे ही भक्तिपूर्वक घट स्थापन करै ॥ ३४ ॥

गणेशं पूर्वमभ्यर्च्य ततोऽभीष्टां प्रपूजयेत् ॥
ध्यानेनवक्ष्यमाणेनध्यात्वावाह्यघटेध्रुवम्॥३५॥
ध्यात्वा पुनःषोडशोपचारेण पूजयेद्व्रती ॥
पूजोपयुक्तनैवेद्यंयच्चवेदनिरूपितम् ॥ ३६ ॥

भा॰टी॰—इसके उपरान्त प्रथम उस घटमें गणपतिकी पूजा करके फिर जो ध्यान कहता हूं उसी ध्यानसे सरस्वतीकी भावना करके आवाहनपूर्वक फिर ध्यान पढ़कर षोडशोपचारसे पूजा करै । हे भद्र ! अब वेदमें वा तंत्रमें पूजाकी जिसप्रकार नैवेद्य निर्दिष्ट हुई है ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

वक्ष्यामि सौम्यतत्किंचिद्यथाधीतंयथागमम् ॥
नवनीतंदधिक्षीरंलाजांश्चतिललड्डुकम् ॥ ३७ ॥

भा॰टी॰—अपने ज्ञानके अनुसार समस्त कहता हूं सुनो नवनीत, दधि, क्षीर, खीलैं, तिलोंका लड्डू ॥ ३७ ॥

इक्षुमिक्षुरसं शुक्लवर्णं पक्वगुडं मधु ॥
स्वस्तिकंशर्कराशुक्लधान्यस्याऽक्षतमक्षतम्॥३८

भा०टी०–गन्ना, इक्षुरस, पकाहुआ सफेद गुड, मधु, स्वस्तिक (मंगलपिष्टघृतयुक्त अन्न) शर्करा, सफेद धान्यके अक्षत, तंडुल ॥ ३८ ॥

अस्विन्नशुक्लधान्यस्य पृथुकं शुक्लमोदकम् ॥
घृतसैंधवसंयुक्तंहविष्यान्नंयथोदितम् ॥ ३९ ॥

भा०टी०–अस्विन्न शुक्लधान्यका चिपिटक (बनाहुआ पदार्थ) शुक्ल मोदक, घृत सैंधवसंयुक्त हविष्यान्न ॥ ३९ ॥

यवगोधूमचूर्णानां पिष्टकं घृतसंयुतम् ॥
पिष्टकस्वस्तिकस्याऽपिपक्वरंभाफलस्यच ४०॥

भा०टी०--यवचूर्ण वा गोधूमचूर्णका घृतसंयुक्त पिष्टक, कसार, स्वस्तिक पिष्टक (मंगलदायक मिष्टपदार्थ) स्वस्तिकयुक्त पकीहुई केलेकी फलीका पिष्टक ॥ ४० ॥

परमान्नं च सघृतं मिष्टान्नं च सुधोपमम् ॥
नारिकेलंतदुदकंकशेरुंमूलमार्द्रकम् ॥ ४१ ॥

भा०टी०–घृतसंयुक्त परमान्न, अमृततुल्य मिष्टान्न, नारिकेल, नारिकेलोदक, कशेरू, मूली, अदरख ४१

पक्वरंभाफलं चारु श्रीफलं बदरीफलम् ॥
कालदेशोद्भवंचारुफलं शुक्लंचसंस्कृतम् ॥ ४२॥

भा०टी०–पकीहुई केलेकी फली अत्युत्कृष्ट श्रीफल बदरीफल (बेर) और यथाकाल यथा देशोत्पन्न अन्यान्य शुक्लवर्ण सुसंस्कृत फल प्रदान करै ॥ ४२॥

सुगंधंशुक्लपुष्पंचसुगंधंशुक्लचंदनम् ॥
नवीनंशुक्लवस्त्रंचशंखंचसुंदरंमुने ॥ ४३ ॥

भा०टी०–हे वत्स नारद ! सुगंध शुक्लपुष्प सुगंधित श्वेतचंदन नवीन शुक्लवस्त्र, मनोहर शख ॥४३॥

माल्यंचशुक्लपुष्पाणांशुक्लहारंचभूषणम् ॥
यादृशंचश्रुतौध्यानंप्रशस्यंश्रुतिसुंदरम् ॥ ४४ ॥

भा०टी०–सफेद फूलोंकी माला, शुक्ल हार और सुंदर भूषण सरस्वतीको प्रदान करै. हे महाभाग ! वेदमें सरस्वतीदेवीका जिसप्रकार भ्रमभंजन श्रवणमनोहर ध्यान निर्दिष्ट हुआ है ॥ ४४ ॥

तन्निबोध महाभाग भ्रमभंजनकारणम् ॥
सरस्वतींशुक्लवर्णांसस्मितांसुमनोहराम् ॥४५॥

भा०टी०–वह कहता हूं सुनौ जो सरस्वती शुक्लवर्ण हास्ययुक्त मनोहर है ॥ ४५ ॥

कोटिचंद्रप्रभासुष्टपुष्टश्रीयुक्तविग्रहाम् ॥
वह्निशुद्धांशुकाधानांवीणापुस्तकधारिणीम् ४६

भा–टी०–जिसकी शरीरकी प्रभासे करोड़ चन्द्रमाकी प्रभा भी मलिनता धारण करती है जिनका परिधान अग्निपरीक्षित विशुद्ध पट्टवस्त्र है जिनके हाथमें बीणायंत्र और पुस्तक है ॥ ४६ ॥

रत्नसारेंद्रनिर्माणनवभूषणभूषिताम् ॥
सुपूजितांसुरगणैर्ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ ४७॥

भा०टी०–जो सर्वोत्कृष्ट रत्नजात नव भूषणोंसे विभूषित हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वरादि देवतागण सदा जिनकी पूजा करतेहैं ॥ ४७ ॥

वंदेभक्त्यावंदितांचमुनींद्रमनुमानवैः ॥
एवंध्यात्वाचमूलेनसर्वंदत्त्वाविचक्षणः ॥ ४८ ॥

भा०टी०–जो मुनीन्द्र मनु और मनुष्योंसे सर्वदा वंदित होती हैं मैं भक्तिभावसे उन्हीं शुक्लवर्णा हास्यानना मनोहरा सरस्वतीकी वन्दना करता हूं. विचक्षण पुरुष इसप्रकार ध्यान करके सब द्रव्य मूलमंत्र उच्चारणपूर्वक प्रदान करै ॥ ४८ ॥

संस्तूयकवचंधृत्वाप्रणमेद्दंडवद्भुवि ॥
येषांचेयमिष्टदेवीतेषांनित्याक्रियामुने ॥ ४९ ॥

भा०टी०–फिर स्तवपाठ और कवचधारणपूर्वक पृथ्वीमें गिरकर दण्डवत् प्रणाम करै.हे मुनिवर ! यह देवी सरस्वती जिनकी इष्टदेवता है उनकी तो बातही नहीं ॥ ४९ ॥

विद्यारंभेचवर्षांतेसर्वेषांपंचमीदिने ॥
सर्वोपयुक्तोमूलंचवैदिकाष्टाक्षरःपरः ॥ ५० ॥

भा०टी०–इसके अतिरिक्त सर्व साधारणको विद्यारम्भ दिवसमें और वर्षके अन्तमें माघशुक्ला पंचमीके दिन सरस्वतीकी पूजा करनी चाहिये वेदोक्त अष्टाक्षरयुक्त मंत्रही सरस्वतीका मूलमंत्र है ॥ ५० ॥

येषांयेनोपदेशोवातेषांसमूलएवच ॥
सरस्वतीचतुर्थ्यंतंवह्निजायांतमेवंच ॥ ५१ ॥

भा०टी०–अथवा जो जिस मंत्रमें दीक्षित हो वही उनका मूलमंत्र है अतएव निज मूलमंत्रसे हो वा सरस्वती शब्दमें चतुर्थी मिलाकर अग्निपत्नी "स्वाहा" पर्यन्त शेष धरकर ॥ ५१ ॥

लक्ष्मीमायादिकंचैवमंत्रोऽयंकल्पपादपः ॥
पुरानारायणश्चेमंवाल्मीकायकृपानिधिः ॥५२॥
प्रददौ जाह्नवीतीरे पुण्यक्षेत्रेचभारते ॥
भृगुर्ददौचशुक्रायपुष्करेसूर्यपर्वणि ॥ ५३ ॥

भा०टी०–उसके पहिले प्रणव श्रीं ह्रीं बीज उच्चारण पूर्वक उस मंत्रसे अर्थात् श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा इस अष्टाक्षर मंत्रसे सरस्वतीको सम्पूर्ण वस्तु प्रदान करै । लक्ष्मीमायादिक यह मंत्रही कल्पवृक्ष है अर्थात् कल्पवृक्षके निकटसे जिसप्रकार सम्पूर्ण अभीष्ट लाभ होता है उसी प्रकार इसमंत्रसे भी सम्पूर्ण अभीष्ट लाभ होता है कृपानिधि नारायणने पूर्व कालके समय पुण्यक्षेत्र भारतवर्षमें गंगाके तटपर वाल्मीकिको यह मंत्र प्रदान किया इसके उपरान्त भृगुने एक समय सूर्यग्रहणके समय पुष्करतीर्थमें महर्षि शुक्राचार्यको ॥ ५२ ॥ ५३ ॥

चंद्रपर्वणिमारीचोददौवाक्पतयेमुदा ॥
भृगोश्चैवददौतुष्टोब्रह्माबदरिकाश्रमे ॥ ५४ ॥

भा०टी०--मरीचिने चन्द्रग्रहणके समय बृहस्पतिको, बदरिकाश्रममे ब्रह्माने भृगुकों ॥ ५४ ॥

आस्तिकस्यजरत्कारुर्ददौक्षीरोदसन्निधौ ॥
विभांडकोददौमेरौऋष्यशृंगायधीमते ॥ ५५ ॥

भा०टी०–क्षीरोदसागरके तटपर जरत्कारुने आस्तिकको सुमेरुपर्वतमें विभाण्डकने धीमान् ऋष्यशृङ्गको ॥ ५५ ॥

शिवःकणादमुनयेगौतमायददौमुदा ॥
सूर्यश्चयाज्ञवल्क्यायतथाकात्यायनायच ॥५६॥

भा०टी०–शिवने कणाद और गौतमको सूर्यने याज्ञवल्क्य और कात्यायनको ॥ ५६ ॥

शेषःपाणिनयेचैवभारद्वाजायधीमते ॥
ददौशाकटायनायसुतलेबलिसंसदि ॥ २७ ॥

भा०टी०–अनन्तदेवने पातालतलमें बलिसभामें पाणिनि धीमान् भरद्वाज और शाकटायनको यह मंत्र प्रदान किया था ॥ ५७ ॥

चतुर्लक्षजपेनैवमंत्रःसिद्धोभवेन्नृणाम् ॥
यदिस्यान्मंत्रसिद्धोहिबृहस्पतिसमोभवेत् २८॥

भा०टी०–इस मंत्रको चार लक्षवार जपनेसेही

मनुष्य सिद्ध होतेहैं मंत्र सिद्ध होनेसेही बृहस्पतिके समान शक्तिशाली होसकता है ॥५८ ॥

कवचं शृणुविप्रेंद्रयद्दत्तंब्रह्मणापुरा ॥
विश्वस्रष्ट्राविश्वजयंभृगवेगंधमादने ॥ ५९ ॥

भा०टी०–पूर्वकालके समय विश्वस्रष्टा ब्रह्माजीने गंधमादनपर्वतमें भृगुको विश्वजय नामक जो कवच प्रदानकिया था, उसको कहता हूं सुनो ॥ ५९ ॥

भृगुरुवाच ।

ब्रह्मन्ब्रह्मविदांश्रेष्ठब्रह्मज्ञानविशारद ॥
सर्वज्ञसर्वजनकसर्वेशसर्वपूजित ॥ ६० ॥

भा०टी०–एक समय भृगुने सर्वेश्वर सर्वपूजित ब्रह्मासे कहा। भृगु बोले–हे ब्रह्मन्!आप सब वेदवेताओं में अग्रणी हैं वेदज्ञान विषयमें आपके समान दूसरा नहीं है ॥ ६० ॥

सरस्वत्याश्चकवचंब्रूहिविश्वजयंप्रभो ॥
अयातयाममंत्राणांसमूहसंयुतं परम् ॥ ६१ ॥

भा०टी०–यही क्या! आपको अविदित कुछ भी नहीं है अर्थात् आप सभी जानते हैं, क्योंकि समस्तही आपसे उत्पन्न हुआ है. अतएव हे प्रभो! जो निर्दोष और समस्तमंत्र गुणनिष्ठ है आप वही सर्वोत्कृष्ट विश्वविजयनामक सरस्वती कवच मेरे निकट कीर्तन कीजिये ॥ ६१ ॥

ब्रह्मोवाच।

शृणुवत्सप्रवक्ष्यामिकवचंसर्वकामदम् ॥
श्रुतिसारंश्रुतिसुखंश्रुत्युक्तंश्रुतिपूजितम् ॥ ६२ ॥

भा०टी०–ब्रह्माजी बोले–हे वत्स! तुमने जो श्रवण-मनोहर वेदविहित वेदपूजित सर्वाभीष्टप्रद सरस्वती-कवचको पूछा सो कहता हूं सुनो ॥ ६२ ॥

उक्तंकृष्णेनगोलोकेमह्यंवृंदावनेवने ॥
रासेश्वरेणविभुनारासेवैरासमंडले ॥ ६३ ॥

भा०टी०-सबसे पहले रासेश्वर विभु श्रीकृष्णने गोलोकधाममें वृन्दावन नामक अरण्यमें रासोत्सवके समय रासमण्डलमें यह "सरस्वतीकवच" मुझसे कहा था ॥ ६३ ॥

अतीवगोपनीयंचकल्पवृक्षसमंपरम् ॥
अश्रुताद्भुतमंत्राणांसमूहैश्चसमन्वितम् ॥ ६४ ॥

भा०टी०-यह कवच अतीव गोपनीय और कल्पवृक्षके समान अश्रुत अद्भुत मंत्रोंसे परिपूर्ण है ॥ ६४ ॥

यद्धृत्वाभगवाञ्छुक्रःसर्वदैत्येषुपूजितः ॥
यद्धृत्वा पठनाद्ब्रह्मन्बुद्धिमांश्चबृहस्पतिः ६५ ॥

भा०टी०-यह कवच पाठ धारण करके बृहस्पति बुद्धिवेत्ता विषयमें अग्रणी हुए हैं और इसी कवचके

बलसे शुक्राचार्यने दैत्योंके निकट प्रधानता लाभ की है ॥ ६५ ॥

पठनाद्धारणाद्वाग्मीकवीन्द्रोवाल्मिकोमुनिः ॥
स्वायंभुवोमनुश्चैवयद्धृत्वासर्वपूजितः ॥ ६६ ॥

भा०टी०--इसी कवचके पाठसे मुनिवर वाल्मीकिने वाग्मिता लाभ करके कवीन्द्रपदमें आरोहण किया है स्वायंभुव मनु इसको धारण करके सर्वत्रसमाद्रित हुए हैं ॥ ६६ ॥

कणादोगोतमःकण्वःपाणिनिःशाकटायनः ॥
ग्रंथंचकारयद्धृत्वादक्षःकात्यायनःस्वयम् ॥ ६७ ॥

भा०टी०--कणाद, गौतम, कण्व, पाणिनि, शाकटायन, दक्ष, कात्यायन यह सभी इस कवचके प्रभावसे ग्रंथकार पदमें अभिषिक्त हुए हैं ॥ ६७ ॥

धृत्वा वेदविभागंचपुराणान्यखिलानिच ॥
चकारलीलामात्रेणकृष्णद्वैपायनःस्वम् ॥ ६८ ॥

भा०टी०--कृष्णद्वैपायन वेदव्यासने इस कवचको धारण करके वेदविभाग और अठारह पुराणकी रचना की है ॥ ६८ ॥

शातातपश्चसंवर्तो वसिष्ठश्चपराशरः ॥
यद्धृत्वापठनाद्ग्रन्थंयाज्ञल्क्यश्चकारसः ॥ ६९ ॥

भा०टी०--शातातप, वसिष्ठ, पराशर और याज्ञवल्क्य सरस्वतीकवचको धारण और पाठ करके ग्रंथकार हुए हैं ॥ ६९ ॥

ऋष्यशृंगो भरद्वाजश्चास्तिको देवलस्तथा ॥
जैगीषव्योययातिश्चधृत्वासर्वत्रपूजिताः ॥७०॥

भा०टी०--ऋष्यशृंग, भरद्वाज, आस्तिक, देवल, जैगीषव्य और ययाति इन सबने इसकेही बलसे सर्वत्र समान आदर लाभ किया है ॥ ७० ॥

कवचस्यास्यविप्रेंद्रऋषिरेवप्रजापतिः ॥
स्वयंछंदश्चबृहतीदेवताशारदांबिका ॥ ७१ ॥

भा०टी०--हे द्विजवर ! प्रजापति स्वयं इस कवचके ऋषि, बृहती इसका छन्द और शारदा अम्बिका इसकी अधिष्ठात्री देवता है ॥ ७१ ॥

सर्वतत्त्वपरिज्ञानसर्वार्थसाधनेषुच ॥
कवितासुचसर्वासुविनियोगःप्रकीर्तितः ॥ ७२॥

भा०टी०--क्या तत्त्वार्थज्ञान क्या प्रयोगजनकसिद्धि क्या समस्त कविता सर्वत्र इसका विनियोग होता है ॥ ७२ ॥

श्रींह्रींसरस्वत्यैस्वाहाशिरोमेपातुसर्वतः ॥
श्रींवाग्देवतायैस्वाहाभालंमेसर्वदाऽवतु ॥ ७३ ॥

भा०टी०--श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा' सम्यक्प्रकार मेरे शिरकी रक्षा करो 'श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा' मेरे कपालकी रक्षा करो ॥ ७३ ॥

ॐह्रींसरस्वत्यैस्वाहेतिश्रोत्रेपातुनिरन्तरम् ॥
ॐश्रींह्रींभगवत्यैसरस्वत्यैस्वाहानेत्रयुग्मंसदाऽवतु॥

भा०टी०--ओं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा सर्वदा मेरे दोनों कर्णकी ॐ श्रीं ह्रीं भगवत्य सरस्वत्यै स्वाहा सर्वदा मेरे दोनों नेत्रकी ॥ ७४ ॥

ऐंह्रींवाग्वादिन्यैस्वाहानासांमेसर्वदाऽवतु ॥
ह्रींविद्याधिष्ठात्रीदेव्यैस्वाहाचोष्ठंसदाऽवतु॥७५॥

भा०टी०--ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा सर्वदा मेरी-नासिकाकी ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा सदा मेरे ओष्ठकी ॥ ७५ ॥

ॐश्रींह्रींब्राह्मयैस्वाहेतिदंतपंक्तिंसदाऽवतु ॥
ऐमित्येकाक्षरोमंत्रोममकंठंसदाऽवतु ॥ ७६ ॥

भा०टी०--ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहा मेरी दन्त-पंक्तियोंकी ऐं यह एकाक्षरमंत्र सदा मेरे कंठकी॥ ७६ ॥

ॐश्रींह्रींपातुमेग्रीवांस्कंधौमेश्रींसदाऽवतु ॥
ॐह्रींविद्याधिष्ठातृदेव्यैस्वाहावक्षःसदाऽवतु ७७॥

भा०टी०--ॐ श्रीं ह्रीं मेरी ग्रीवाकी श्रीं मेरे दोनों कंधोंकी ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा सदा मेरे वक्षःस्थलकी ॥ ७७ ॥

ॐह्रींविद्याधिस्वरूपायैस्वाहामेपातुनाभिकाम्॥
ॐह्रींक्लींवाण्यैस्वाहेतिममहस्तौसदाऽवतु ॥७८॥

भा०टी०--ॐ ह्रीं विद्याधिस्वरूपायै स्वाहा मेरी नाभिकी ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहा मेरे दोनों हाथोंकी ॥ ७८ ॥

ॐसर्ववर्णात्मिकायैपादयुग्मंसदाऽवतु ॥
ॐवागधिष्ठातृदेव्यैस्वाहासर्वंसदाऽवतु ॥७९॥

भा०टी०--ॐ सर्ववर्णात्मिकायै स्वाहा मेरे चरण युगल और ॐ वागधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा मेरे सर्वाङ्गकी सदा रक्षा करे ॥ ७९ ॥

ॐसर्वकंठवासिन्यैस्वाहाप्राच्यांसदाऽवतु ॥
ॐसर्वजिह्वाग्रवासिन्यैस्वाहाऽग्निदिशिरक्षतु ८०

भा०टी०— सर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा मेरे सर्वदिक् ॐ सर्वजिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा मेरे अग्निकोण ॥८०॥

ॐऐंह्रींक्लींसरस्वत्यैबुधजनन्यैस्वाहा ॥
सततंमंत्रराजोऽयंदक्षिणेमांसदाऽवतु ॥ ८१ ॥

भा०टी०—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा मेरे दक्षिणदिक् ॥ ८१ ॥

ऐंह्रींश्रींत्र्यक्षरोमंत्रोनैर्ऋत्यांसर्वदाऽवतु ॥
ॐऐंजिह्वाग्रवासिन्यैस्वाहामांवारुणेऽवतु॥८२॥

भा०टी०—ऐं ह्रीं श्रीं यह त्र्यक्षर मंत्र मेरे नैर्ऋत्य-कोण ॐ ऐं जिह्वाग्रवासिन्ये स्वाहा मेरे पश्चिम-दिक् ॥ ८२ ॥

ॐसर्वांबिकायैस्वाहावायव्येमांसदाऽवतु ॥
ॐऐंश्रींक्लींगद्यवासिन्यैस्वाहामामुत्तरेऽवतु ८३॥

भा०टी०—ॐ सर्वाम्बिकायै स्वाहा मेरे वायुकोण ॐ ऐं श्रीं क्लीं गद्यवासिन्यै स्वाहा मेरे उत्तरादिक् ८३

ऐंसर्वशास्त्रवासिन्यैस्वाहैशान्यांसदाऽवतु ॥
ॐह्रींसर्वपूजितायैस्वाहाचोर्द्ध्वंसदाऽवतु ॥ ८४॥

भा०टी०—ऐं सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहा मेरे ईशान-कोण ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा ऊर्ध्वभाग ॥ ८४॥

ह्रींपुस्तकवासिन्यैस्वाहाऽधोमांसदाऽवतु ॥
ॐग्रंथबीजस्वरूपायैस्वाहामांसर्वतोऽवतु॥८५॥

भा०टी०--ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहा मेरे अधो-भाग औरॐ ग्रंथबीजस्वरूपायै स्वाहा मेरे समस्त दिक् की रक्षा करै ॥ ८५ ॥

इतितेकथितंविप्रब्रह्ममंत्रौघविग्रहम् ॥
इदंविश्वजयंनामकवचंब्रह्मरूपकम् ॥ ८६ ॥

भा०टी०--हे वत्स नारद ! यह मंत्रशरीर ब्रह्मस्व-रूप विश्वजय नामक कवच तुमसे कहा ॥ ८६ ॥

पुराश्रुतंधर्मवक्त्रात्पर्वतेगंधमादने ॥
तवस्नेहान्मयाख्यातंप्रवक्तव्यंनकस्यचित् ८७॥

भा०टी०--पूर्वकालके समय मैंने यह कवच गंधमादन पर्वतमें धर्मदेवके मुखसे सुनाथा, अब अतिशय स्नेह होनेके कारण तुमसे कहा किन्तु यह कवच कभी किसीके निकट न कहना ॥ ८७ ॥

गुरुमभ्यर्च्यविधिवद्वस्त्रालंकारचंदनैः ॥
प्रणम्यदंडवद्भूमौकवचंधारयेत्सुधीः ॥ ८८ ॥

भा०टी०--वस्त्र अलंकार और चंदनद्वारा यथाविधि गुरुदेवकी अर्चना करके गुरुदेवके चरणमें दण्डवत् प्रणामपूर्वक यह कवच धारण करै ॥ ८८ ॥

पंचलक्षजपेनैवसिद्धंतुकवचंभवेत् ॥
यदिस्यात्सिद्धकवचोबृहस्पतिसमोभवेत्॥८९॥

भा०टी०--फिर लक्षवार जप करनेसे कवच सिद्ध

होता है, कवचधारी पुरुष कवचके सिद्ध होनेसेही बृहस्पतिके समान बुद्धिमान् ॥ ८९ ॥

महावाग्मीकवींद्रश्चत्रैलोक्यविजयीभवेत् ॥
शक्नोतिसर्वंजेतुंचकवचस्यप्रसादतः ॥ ९० ॥

भा०टी०--वाग्मी, कवीन्द्र और त्रैलोक्यविजयी होता है, अधिक क्या इस कवचके प्रभावसे सम्पूर्ण जय करनेमें समर्थ होता है ॥ ९० ॥

इदंचकण्वशाखोक्तंकवचंकथितंमुने ॥
स्तोत्रपूजाविधानंचध्यानंचवंदनंशृणु ॥ ९१ ॥
इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे देवीकवचवर्णनं नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

भा०टी०--हे मुने ! मैंने तुमसे यह कण्वशाखोक्त कवचका विषय कहा और पूजाविधि, ध्यान और वन्दनादिक विषय वर्णन करता हूं सुनो ॥ ९१ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे देवीकवचे भाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

द्वितीयोऽध्यायः २.

श्रीनारायण उवाच ।

वाग्देवतायाःस्तवनंश्रूयतांसर्वकामदम् ॥
महामुनिर्याज्ञवल्क्योयेनतुष्टावतांपुरा ॥ १ ॥

भा०टी०--नारायणने कहा--हे वत्स नारद ! पूर्वकालके समय ऋषिवर याज्ञवल्कयने जिस स्तोत्रसे वाग्देवी सरस्वीका स्तव किया था, इस समय सर्वकामप्रद उन्हीं सरस्वतीका स्तव कीर्तन करताहूं सुनो॥१॥

गुरुशापाच्चसमुनिर्हतविद्योबभूवह ॥
तदाजगामदुःखार्तोरविस्थानंसुपुण्यदम् ॥ २ ॥

भा०टी०--मुनिवर याज्ञवल्क्य गुरुशापके कारण समस्त वेदादि भूलकर अत्यन्त दुःखित चित्तसे पुण्यप्रद रविस्थानमें गये ॥ २ ॥

संप्राप्यतपसासूर्यंलोलार्केदृष्टिगोचरे ॥
तुष्टावसूर्यंशोकेनरुरोदचमुहुर्मुहुः ॥ ३ ॥

भा०टी०--वहाँ कुछ काल तपस्याके पीछे सूर्य-देवके नयनगोचर होनेपर अति शोकमें पीडित हो बारम्बार रोदन करते २ उनकी स्तुतिमें प्रवृत्त हुए॥३॥

सूर्यस्तंपाठयामासवेदंवेदांगमीश्वरः ॥
उवाचस्तुहिवाग्देवींभक्त्याचस्मृतिहेतवे ॥ ४ ॥

भा०टी०--तब भगवान् सूर्यने प्रसन्नहोकर उनको संपूर्ण वेद और वेदाङ्ग शिक्षाप्रदानपूर्वक कहा,हे वत्स ! अब तुम स्मरणशक्तिप्राप्तिके लिये भक्तिसहित वाग्देवीका स्तव करो ॥ ४ ॥

तमित्युक्त्वादीननाथोऽप्यंतर्द्धानंचकारसः ॥
मुनिःस्नात्वाचतुष्टावभक्तिनम्रात्मकंधरः ॥५॥

भा०टी०--दिवाकर यह कहतेही वहांसेअन्तर्धान होगये, इधर मुनिवर याज्ञवल्क्य स्नानकरके भक्तिपूर्वक मस्तक झुकाय वाग्देवीके स्तवपाठमें प्रवृत्त हुए॥५॥

याज्ञवल्क्य उवाच ।

कृपांकुरुजगन्मातर्मामेवंहततेजसम् ॥
गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टंविद्याहीनंचदुःखितम् ॥६॥

भा०टी०--याज्ञवल्क्यने कहा हे मातः !गुरुके शापसे मेरी स्मृति भ्रष्ट हुई है, मैं विद्याहीन और तेजोहीन होगया हूं,मेरे दुःखकी अवधि नहीं है.हे जगज्जननी ! मुझपर कृपा करो ॥ ६ ॥

ज्ञानंदेहिस्मृतिंविद्यांशक्तिंशिष्यप्रबोधिनीम् ॥
ग्रंथकर्तृत्वशक्तिंचसुशिष्यंसुप्रतिष्ठितम् ॥ ७ ॥

भा०टी०--मुझको ज्ञान, विद्या, स्मृति, शिष्यबोधिनी शक्ति, ग्रन्थकर्तृत्व और प्रतिभासम्पन्न सुशिष्य प्रदान करो ॥ ७ ॥

प्रतिभांसत्सभायांचविचारक्षमतांशुभाम् ॥
लुप्तंसर्वंदैवयोगान्नवीभूतंपुनःकुरु ॥ ८ ॥

भा०टी०--जिससे सज्जनोंके समाजमें मेरी भी भली भाँति प्रतिभा और विचारशक्ति प्रसारित हो, दैवके दुर्विपाकसे मेरा जो कुछ नष्ट हुआ है ॥ ८ ॥

यथांकुरंभस्मनिचकरोतिदेवतापुनः ॥
ब्रह्मस्वरूपापरमाज्योतीरूपासनातनी ॥९ ॥

भा०टी०--वह भस्मराशिसमुद्भूत बीजांकुरकी समान संपूर्ण मेरे उत्पादिकाशक्तिशून्य चित्तक्षेत्रमें उदय होकर पुनर्वार नवीनभाव धारण करै. हे मातः! तुमही ब्रह्मस्वरूपिणी तुमही सर्वश्रेष्ठ तुमही ज्योतिःस्वरुपा तुमही सनातनी ॥ ९ ॥

सर्वविद्याधिदेवीयातस्यैवाण्यैनमोनमः ॥
विसर्गाबिंदुमात्रासुयदधिष्टानमेवच ॥ १० ॥

भा०टी०--और तुमही समस्तविद्याओंकी अधिष्ठात्री देवी हो इस कारण तुमको बारम्बार नमस्कार

करता हूं. हे मातः ! अनुस्वार विसर्ग और चन्द्रबिंदु जिन वर्णोंका आश्रय करके रहते हैं ॥ १० ॥

तदधिष्ठात्रीयादेवीतस्यैनित्यैनमोनमः ॥
व्याख्यास्वरूपा देवीव्याख्याधिष्ठातृरूपिणी ११

भा०टी०—तुम वही वर्णस्वरूपिणी हो अतएव तुमको नमस्कार है. हे मातः ! तुमही शास्त्रकी व्याख्यास्वरूप और तुमही समस्तव्याख्याकी अधिष्ठात्री देवी हो ॥ ११ ॥

ययाविनाप्रसंख्यावान्संख्यांकर्तुंनशक्यते ॥
कालसंख्यास्वरूपायातस्यैदेव्यैनमोनमः॥ १२॥

भा०टी०—तुम्हारे विना गणितविद्याके पारदर्शी भी किसी विषयकी गणना करनेमें समर्थ नहीं हैं, अतएव तुम कालगणनाकी संख्यास्वरूप हो ॥ १२॥

भ्रमसिद्धांतरूपायातस्यैदेव्यैनमोनमः ॥
स्मृतिशक्तिज्ञानशक्तिबुद्धिशक्तिस्वरूपिणी॥ १३

भा०टी०तुमही मनुष्योंका भ्रमभंजन करनेवाली सिद्धान्तशक्तिरूप हो, अतएव तुमको बारम्बार नमस्कार है. हे मातः! तुमही स्मृतिशक्ति, तुमही ज्ञानशक्ति तुमही बुद्धिशक्तिस्वरूपिणी हो ॥ १३ ॥

प्रतिभाकल्पनाशक्तिर्याचतस्यैनमोनमः ॥
सनत्कुमारोब्रह्माणंज्ञानंपप्रच्छयत्रवै ॥ १४ ॥

भा०टी०--तुमही प्रतिभाशक्ति और तुमही कल्पनाशक्ति हो, अतएव बारम्बार तुमको प्रणाम करते हैं. स्वयं सनत्कुमारने भी जब भ्रमयुक्त होकर ब्रह्माजीसे प्रश्नकिया ॥ १४ ॥

बभूवमूकवत्सोऽपिसिद्धांतंकर्तुमक्षमः ॥
तदाऽऽजगामभगवानात्मा श्रीकृष्णईश्वरः १५॥

भा०टी०—तब वह उसका सिद्धान्त करनेमें असमर्थ होकर मूककी समान निरुत्तर रहे, तब परमात्मरूपी परमेश्वर श्रीकृष्णने वहाँ उपास्थित होकर—१५॥

उवाचसचतांस्तौहिवाणीमिष्टांप्रजापते ॥
सचतुष्टावतांब्रह्माचाज्ञयापरमात्मनः ॥ १६ ॥

भा०टी०—कहा, हे प्रजापते ! तुम अभीष्टदात्री वागीश्वरीका स्तव करो तो तुम्हारा सिद्धान्त स्थिर होगा. तब चतुराननने परमेश्वरकी आज्ञानुसार देवी सरस्वतीका स्तव करके—॥ १६ ॥

चकारतत्प्रसादेनतदासिद्धांतमुत्तमम् ॥
यदाप्यनंतपप्रच्छज्ञानमेकंवसुंधरा ॥ १७ ॥

भा०टी०—उनके प्रसादबलसे अति उत्तम सिद्धान्त स्थिर किया, एकदिन वसुन्धराने संदिग्धचित्तसे अनन्तदेवके निकट प्रश्न किया ॥ १७ ॥

बभूवमूकवत्सोऽपिसिद्धांतंकर्तुमक्षमः ॥
तदातांसचतुष्टावसंत्रस्तःकश्यपाज्ञया ॥१८॥

भा०टी०—तब वह भी सिद्धांत स्थिर करनेमें असमर्थ होकर मूककी समान निरुत्तर रहे, अन्तमें महाभीत हो कश्यपकी आज्ञानुसार तुम्हारा स्तव करनेसे—॥ १८ ॥

ततश्चकारसिद्धांतंनिर्मलंभ्रमभंजनम् ॥
व्यासःपुराणसूत्रंचपप्रच्छवाल्मिकिंयदा ॥१९॥

भा०टी०—उनका भ्रम दूर होकर सिद्धान्त स्थिर हुआ, तब श्रीवेदव्यासजीने वाल्मीकिके निकट जायकर पुराणसूत्रका विषय पूँछा ॥ १९ ॥

मौनीभूतश्चसस्मारतामेवजगदंबिकाम् ॥
तदाचकारसिद्धांतंतद्वरेणमुनीश्वरः ॥ २० ॥

भा०टी०--तब मुनिवर वाल्मीकिने हतबुद्धि होकर जगत्की मातास्वरूप तुमको स्मरण किया, तुम्हारे प्रसादसे ज्ञानज्योतिके प्रकाशित होनेपर ऋषिवरका भ्रमान्धकार दूर हुआ ॥ २० ॥

संप्राप्यनिर्मलंज्ञानंभ्रमांध्यध्वंसदीपकम् ॥
पुराणसूत्रंश्रुत्वाचव्यासःकृष्णकलोद्भवः ॥२१॥

भा०टी०--तब वह श्रीवेदव्यासके किये प्रश्नके विषयका सिद्धांत स्थिर करनेमें समर्थ हुए, तब कृष्णां-

शोत्पन्न श्रीव्यासदेवजीने महर्षि वाल्मीकिजीके मुखसे पुराणसूत्रका विषय सुनकर तुम्हारी महिमा जानी २१

तांशिवांवेददध्यौचशतवर्षंचपुष्करे ॥
तदात्वत्तोवरंप्राप्यसत्कवींद्रोबभूवह ॥ २२ ॥

भा०टी०—और फिर पुष्करतीर्थमें जाय शत वर्ष-पर्यंत शान्तिस्वरूपा तुम्हारी आराधनामें प्रवृत्त हुए इसके पीछे तुम्हारे प्रसन्न होनेपर उनको वर देनेसे वह कवीन्द्रपदवीमें आरूढ हुए ॥ २२ ॥

तदावेदविभागंचपुराणंच चकार सः ॥
यदामहेंद्रःपप्रच्छतत्त्वज्ञानंसदाशिवम् ॥ २३ ॥

भा०टी०--फिर उन्होंने वेदविभाग और अठारह पुराणोंकी रचना करी जब महेन्द्रने सदाशिवसे तत्त्व-ज्ञानकी कथा पुँछी ॥ २३ ॥

क्षणंतामेवसंचिंत्यतस्मैज्ञानंददौविभुः ॥
पप्रच्छशब्दशास्त्रंचमहेंद्रश्चबृहस्पतिम् ॥ २४ ॥

भा०टी०—तब सदाशिवने क्षणकाल तुम्हारी चिन्ता करके तत्त्वज्ञानका उपदेश प्रदान किया. फिर एक समय देवराजने सुरगुरु बृहस्पतिजीके निकट शब्दशास्त्रविषयक प्रश्न पूछाँ ॥ २४ ॥

दिव्यंवर्षसहस्रंचसत्वांदध्यौचपुष्करे ॥
तदात्वत्तोवरंप्राप्यदिव्यवर्षसहस्रकम् ॥२५॥

भा०टी०—तब उन्होंने उसके उत्तर देनेमें असमर्थ होकर पुष्कर तीर्थमें जाय देवपरिमाणसे हजारवर्षपर्यन्त तुम्हारी आराधना करके तुमसे बर पाया॥ २५॥

उवाचशब्दशास्त्रंचतदर्थंचसुरेश्वरम् ॥
अध्यापिताश्चयेशिष्यायैरधीतंमुनीश्वरैः॥२६॥

भा०टी०—फिर दिव्य सहस्र वर्षपर्यन्त महेन्द्रको शब्दशास्त्र और शब्दशास्त्रार्थविषयक उपदेश प्रदान करनेमें समर्थ हुए । हे सुरेश्वरी ! जो मुनिगण शिष्यको शिक्षा प्रदान करते हैं ॥ २६ ॥

तेचतांपरिसंचिंत्यप्रवर्तंतेसुरेश्वरीम् ॥
त्वंसस्तुतापूजिताचमुनींद्रैर्मनुमानवैः २७ ॥

भा०टी०—जो स्वयं अध्ययनमें प्रवृत्त होते हैं वह कोई भी प्रथम तुम्हारा स्मरण विना किये अपने कार्यमें प्रवृत्त नहीं होसक्के, कितनेही मुनीन्द्र कितनेही मनुष्य ॥ २७ ॥

दैत्येंद्रैश्चसुरैश्चाऽपिब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥
जडीभूतःसहस्रास्यःपंचवक्रश्चतुर्मुखः ॥ २८ ॥

भा०टी०—कितनेही दानव कितनेही दैत्येन्द्र कितने ही अमर यही क्या ब्रह्मा विष्णु और महादेव पर्यन्त तुम्हारी पूजा और तुम्हारा स्तव करते हैं किन्तु विष्णु जब सहस्रमुखसे, महादेव पांच मुखसे और ब्रह्मा चार मुखसे ॥ २८ ॥

यांस्तोतुंकिमहंस्तौमितामेकास्येनमानवः ॥
इत्युक्त्वायाज्ञवल्क्यश्चभक्तिनम्रात्मकंधरः २९॥

भा०टी०–तुम्हारा स्तव करनेमें जडीभूत होते हैं तो फिर मैं सामान्य मनुष्य एक मुखसे क्या स्तव करूं. कृतोपवास महर्षि याज्ञवल्क्यने इसप्रकार कहकर भक्तिभावसे मस्तक झुकाय–॥ २९ ॥

प्रणनामनिराहारोरुरोदचमुहुर्मुहुः ॥
ज्योतीरूपामहामायातेनदृष्टाऽप्युवाचतम् ३०॥

भा०टी०–देवीको प्रणाम किया और क्षणक्षणमें रुदन करनेलगे इस समय फिर उन ज्योतीरूपा महामाया सरस्वतीसे नहीं रहागया उन्होंने उनके समीप आनकर कहा ॥ ३० ॥

सुकवींद्रोभवेत्युक्त्वावैकुंठंचजगामह ॥
याज्ञवल्क्यकृतंवाणीस्तोत्रमेतत्तुयःपठेत् ॥३१॥

भा०टी०–"हे वत्स ! तुम सुकवीन्द्र होओ" इसप्रकार वर दे वैकुण्ठधामको चलीगई. जो याज्ञवल्क्य कृत इस सरस्वतीस्तवका पाठ करते हैं ॥ ३१ ॥

सकवींद्रोमहावाग्ग्मीबृहस्पतिसमोभवेत् ॥
महामूर्खश्चदुर्बुद्धिर्वर्षमेकंयदापठेत् ॥ ३२ ॥

भा०टी०—वह सुकवि वाग्मी और बृहस्पतिके समान बुद्धिशक्तिसंपन्न होसक्ते हैं. यदि महामूर्ख मनुष्य भी एक वर्षतक यह वाणीस्तव पाठ करता है॥३२॥

सपंडितश्चमेधावीसुकवींद्रोभवेद्ध्रुवम् ॥ ३३ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कंधे सरस्वतीस्तोत्रवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः॥२॥

भा०टी०—तो वह सहजमेंही सुपण्डित मेधावी और सुकवि होनेमें समर्थ होता है ॥ ३३ ॥

इति श्रीदेवीभागवते महापुराणे नवमस्कन्धे सरस्वतीस्तोत्रे भाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

इति श्री सरस्वतीकवच स्तोत्र भाषाटीकासहित समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका पता—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.